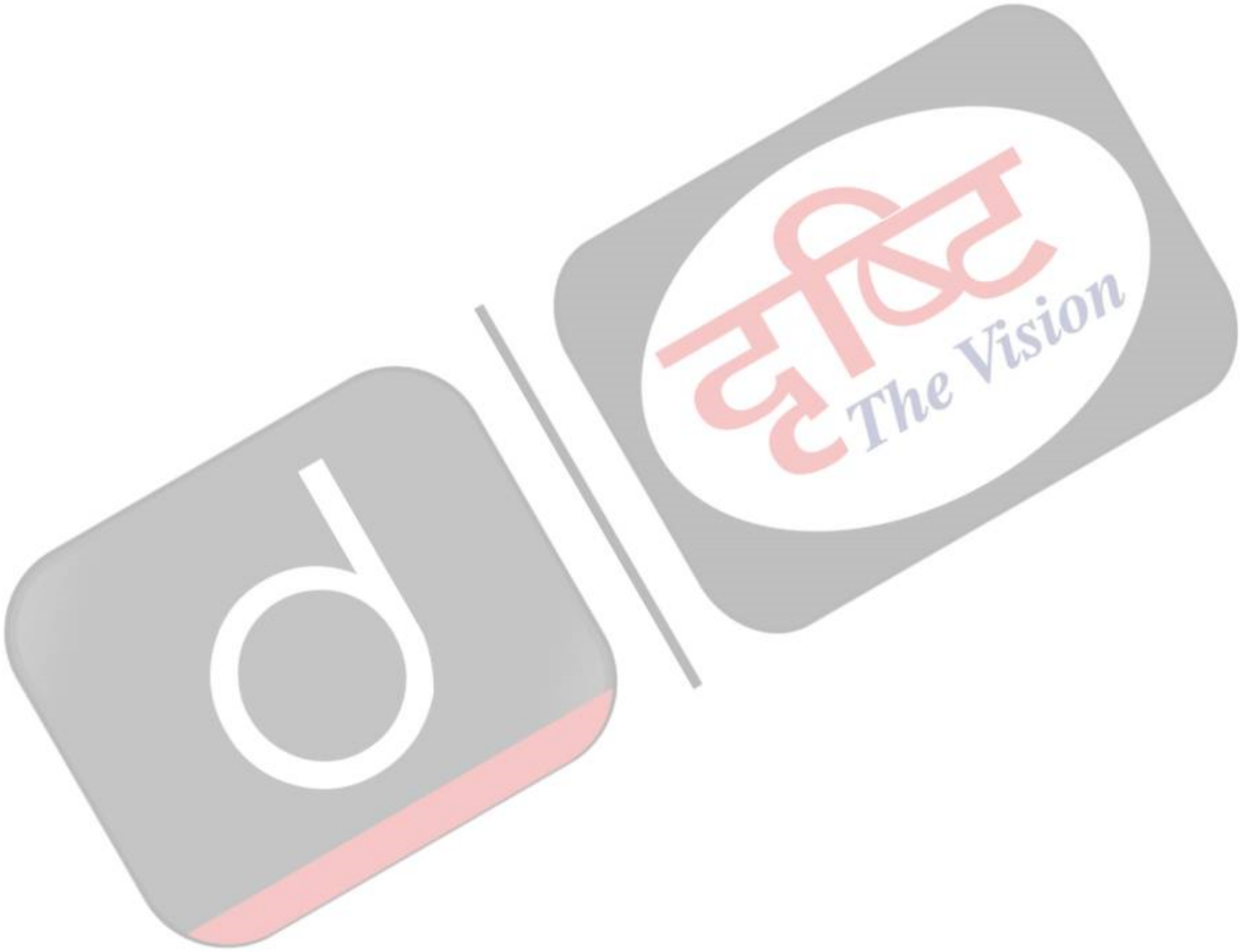




वेदों का एथिक्स



वेदों का एथिक्स

सामान्य परिचय

वेदों का नीतिशास्त्र प्रकृति मागी है इसमें भौतिक या एन्द्रिक सुखों पर बल दिया गया है।

वैदिक काल की नैतिकता बहिर्मुखी है।

इसमें आंतरिक प्रेरणा से नहीं बरन बाह्य दबावों के कारण नैतिकता का पालन किया जाता है।

वर्णाश्रम धर्म

वर्ण व्यवस्था तथा आश्रम व्यवस्था वर्णाश्रम धर्म के दो स्तम्भ हैं।

वर्ण व्यवस्था में समाज को चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में विभाजित किया गया है।

आश्रम व्यवस्था को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास चार आश्रमों में विभाजित किया गया है।

ऋत

यह सम्पूर्ण विश्व में विद्यमान एक नैतिक व्यवस्था है जो पूर्णतः वस्तुनिष्ठ है।

इसी के अनुरूप सभी नैतिक प्रश्नों का निर्धारण होता है।

संस्कार

वह नैतिक मूल्य जो बार-बार अभ्यास से सदगुण या आदत बन जाता है संस्कार कहलाता है।

वैदिक साहित्य में व्यक्ति के जीवन को 16 संस्कारों में बाँटा गया है। जिनमें से कुछ प्रमुख हैं जैसे- गर्भाधान, नामकरण, मुंडन, यज्ञोपवीत, पाणिग्रहण तथा अन्त्येष्टि संस्कार आदि।

ऋण

व्यक्ति अपने नैतिक कर्तव्यों को भूल न जाए इसलिये वैदिक नीतिशास्त्र में ऋण की धारणा विद्यमान है।

इन तीन ऋणों को पुकारा बिना व्यक्ति को मुक्ति नहीं मिल सकती।

व्यक्ति पर जन्म से ही तीन ऋण होते हैं- देव ऋण, ऋषि ऋण तथा पितृ ऋण।

कर्म सिद्धान्त

कर्म सिद्धान्त नैतिकता के क्षेत्र में कारण-कार्य का सिद्धान्त है।

इसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को उसके द्वारा किये गए कर्मों के अनुसार फल मिलता है।

व्यक्ति के कर्म ही उसकी सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक आदि स्थितियों का निर्धारण करते हैं।

कर्म का सिद्धान्त पुनर्जन्म से जुड़ा है जिसमें व्यक्ति को अच्छे बुरे कर्मों का फल भगतने के तिर्ये फिर से जन्म लेना पड़ता है।

पुण्य एवं पाप

ऐसे कर्म या सदगुण जो शुभ की प्राप्ति में सहायक होते हैं पुण्य कहलाते हैं जैसे- सत्य बोलना।

पाप अशुभ में सहायक अनैतिक कर्म हैं जैसे- चोरी, झूठ, हत्या आदि।

पुरुषार्थ

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चार पुरुषार्थ हैं, ये पुरुषार्थ मानव जीवन के लक्ष्य हैं, ये साध्य नहीं अपितु साधन हैं।

वेदों में धर्म, अर्थ और काम पर तथा उपनिषदों में मोक्ष पर अधिक बल दिया गया है।

धर्म का अर्थ है धारण करने योग्य, तथा इसका संबंध मूलतः व्यक्ति के आचरण से है।

अर्थ का मतलब नैतिक तरीकों से अर्जित धन व अन्य सुख सुविधाओं से है।

सीमित अर्थ में काम का तात्पर्य यौन सुख तथा व्यापक अर्थ में सभी सुखों को अभिव्यक्त करना है।

मोक्ष का अर्थ कर्म बंधन या पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति है।